वर्ष -15 दिसम्बर, 2019 अंक-163

Regd. Postal No. Dehradun-328/2019-21
Registered News Paper RNI No. UTTBIL/2006/19407

सहायकारी शक्तियों के सूक्ष्म संरक्षण में

सत्य देव संवाद

इस अंक में

आत्माओं की अवस्था	02	आपने कहा था	16
महाशिविर सूचना	02	देवजीवन की झलक	18
देववाणी	03	अपनी ज़िम्मेदारियों से बचना	20
सत्यधर्म प्रवर्तक-देवात्मा	04	नारी सम्मान, एक महान् भाव	22
त्वमेव माता च पिता त्वमेव	06	भाव प्रकाश	24
अमृत रस	10	शुभ संग्राम	28
देव स्तोत्र की भव्यता	12	प्रेरणास्पद उद्बोधन सेवा	30
कृतज्ञता सुमन	14	महाशिविर कार्यक्रम	32

जीवन व्रत

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा परम लक्ष्य होवे,
जग के उपकर ही में जीवन यह जावे।'

– देवात्मा

सम्पादक
नवनीत अरोड़ा

सहसम्पादक मण्डल
अनिता, चन्द्र गुप्त, वीरेन्द्र अग्रवाल

(सभी पद अवैतनिक हैं।)

ग्राफ़िक डिज़ाईनर : सुशान्त सुनील

**For Motivational Talks/Lectures/Sabhas :
Visit our channel Shubhho Roorkee on
www.youTube.com**

लेखक के सभी विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

वार्षिक सदस्यता ₹ 100, सात वर्षीय ₹ 500, पन्द्रह वर्षीय ₹ 1000
मूल्य (प्रति अंक): ₹ 9

सम्पर्क सूत्र : पत्रिका सम्बन्धी किसी भी जानकारी हेतु
दूरभाष संख्या: 01332-272000, 94672-47438, 99271-46962 (संजय धीमान)
समय : प्रतिदिन सायं 5:00 से सायं 9:00 तक (रविवार को छोड़कर)
e-mail: Shubhho.rke@gmail.com or navneetroorkee@gmail.com

आत्माओं की अवस्था

आत्माओं की चार प्रकार की अवस्था होती है -

1 किसी ग़लती के हो जाने पर ख़ुद-ब-ख़ुद दूसरे के पास जाकर उसको बताते हैं और अफ़सोस का इज़हार करते हैं।

2 उससे आगे उसका उचित परिशोध करते हैं।

3 ख़ुद-ब-ख़ुद तो नहीं, किसी के बताने पर ग़लती को स्वीकार कर लेते हैं।

4 अगर कोई ग़लती बतावे, तो पहले से ही ग़लती न मानने के लिए तैयार रहते हैं या उस वक़्त झट कुछ घड़कर सुना देते हैं और अपनी ग़लती को स्वीकार नहीं करते। यह आत्मा की महा निकृष्ट अवस्था है।

Move on in life

We swallow the bitter medicines quickly
and keep sweet candies in our mouth for longer time.
But in life, we forget the good times quickly and keep
bitter memories in our heart for ever. Think,
forgive and move on in life.

महाशिविर सूचना

अपार हर्ष व गौरव की बात है कि सत्यधर्म बोध मिशन का उद्घोष 20 दिसम्बर 2002 ई. को महाशिविर के अवसर पर हुआ था और इस वर्ष मिशन अपनी आयु का 17 वर्ष सफलतापूर्वक पूरा कर रहा है।

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा का 169 वाँ शुभ जन्म महोत्सव रुड़की में बड़ी धूमधाम से दिनांक 18 से 21 दिसम्बर, 2019 को आत्मबल विकास महाशिविर के रूप में मनाया जा रहा है। सभी पाठकों से निवेदन है कि इस बार ज़रूर-ज़रूर तशरीफ़ लावें और हमारी ख़ुशियों में सांझीदार बनें व अपना आत्मिक हितसाधन करें। 'शुभ हो' परिवार की ओर से सभी को भावपूर्ण निमन्त्रण दिया जाता है।

निवेदक - मंत्री, सत्य धर्म बोध मिशन

हँसमुख इन्सान से मिलकर हर कोई प्रसन्न होता है। कोई भी इन्सान न तो मुरझाए हुए फूल पसन्द करता है, न ही मुरझाए चेहरे।

देववाणी

मनुष्य को आत्मा के सम्बन्ध में अगर कुछ दिखाई देता है, तो हमारी ज्योति के मिलने पर। जब वह ज्योति छिन जाती है, जब वह अन्धे का अन्धा रह जाता है। और तो उसको क्या मिलना था, जो पहले मिला हुआ था, वह भी पास नहीं रहता। आत्माओं को बदलने का जो कारज होता है, वह देवात्मा को पाकर होता है। देवात्मा के बल से खाली होकर प्रचारक ने किसी और का तो क्या बनाना है, उसके लिए अपने आप संभालना भी मुश्किल हो जाता है। नीच शक्तियाँ उसका पतन करते-करते अख़िरकार उसको पूर्णत: नष्ट कर देती हैं।

- देवात्मा

गुदगुदी

पत्नी - दो किलो मटर ले लूँ.....

पति - हाँ, ले लो।

पत्नी - तुम्हारी राय नहीं माँग रही हूँ, केवल बता रही हूँ कि छील लोगे इतनी मटर?

आमंत्रण

सुयोग्य, सुहृदय, सौभाग्यवान प्रिय पाठको, आत्मबल विकास महाशिविर - 2019 एवं देवात्मा का शुभजन्म महोत्सव (169वाँ) 18 से 21 दिसम्बर 2019 तक हरमिलाप भवन, सॉकेत रुड़की में मनाया जा रहा है। आत्मबलवर्द्धन के इस दुर्लभ अवसर से आप लाभ उठाने हेतु सादर आमंत्रित हैं।

जब भी कोई प्रतिद्वंदी आपके सामने हो,
तो उसे प्यार से हराने की कोशिश करें।

सम्पादकीय

सत्यधर्म प्रवर्तक - देवात्मा .....

गुरु देवात्मा का शुभ जन्म 20 दिसम्बर 1850 ई. को श्री अकबरपुर जि. कानपुर देहात (उत्तर प्रदेश) में हुआ। आपका नाम आपके श्रद्धेय माता-पिता ने शिव नारायण रखा।

बाल्यकाल से ही आपके विलक्षण व्यक्तित्व का प्रकाश विभिन्न घटनाओं से होने लगा। उनके विशेष हृदय में हिंसा, द्वेष, ईर्ष्या व घमण्ड के भावों का बीज तक न आया। उन पर सदा शुभ अनुराग का आधिपत्य रहा। उनके व्यक्तित्व में सभी सात्विक भाव गिनती, गहराई, विस्तार व तरतीब में बाल्यकाल से पनपे।

16 वर्ष की आयु में आप थॉमसन इंजीनियरिंग कॉलेज रुड़की (वर्तमान में आई.आई.टी. रुड़की) में अध्ययन हेतु तशरीफ़ लाए। आपने अपनी तीव्र बुद्धि व विलक्षण उच्च चरित्र से सभी को प्रभावित किया। यहीं पर आपकी भेंट कॉलेज में सेवारत एक सात्त्विक जीवनधारी महापुरुष से हुई, जिनका नाम था ऋषि शिवदयाल सिंह जी। इनकी चारित्रिक आभा से आकृष्ट होकर आपने इन्हें गुरु ग्रहण किया तथा मानो उस युवा अवस्था में सच्चा आध्यात्मिक सुरक्षा कवच पा लिया। अपने असाधारण श्रद्धा भाव से उनके सात्विक गुणों को अपने भीतर समा लिया।

23 वर्ष की आयु में आप लाहौर तशरीफ़ ले आए। यहाँ पर सरकारी नौकरी के साथ-साथ आपने अपना समय, ब्रह्म समाज के समाज सुधारक कार्यक्रमों में देना प्रारंभ किया। अपनी असाधारण आवाज़, विलक्षण तड़प के कारण आपने कुरीतियों व अंध विश्वासों के विरुद्ध एक तूफ़ान खड़ा कर दिया। बाल-विवाह, छूआछूत, विधवा पुर्नविवाह निषेध, स्त्रियों की शिक्षा की विरोधिता आदि के विरुद्ध आवाज़ उठाई। अपने ख़र्च से 1875 ई. में दो अखबार 'बिरादरे-हिन्द' व 'हिन्दु बान्धव' जारी किए।

आपके भीतर हित अनुरागी भूमि में सत्य अनुराग का प्रकाश हुआ व दोनों अनुराग 32 वर्ष की आयु तक इतने विकसित हो गए कि संसार में फैले असत्य व अशुभ के कारण मानवता की व्यथा को देखकर आप बैचेन हो गए। आपकी विलक्षण शक्तियों ने ऊँची सरकारी नौकरी को छोड़कर विश्व के चारों जगतों के सर्वांगीण विकास हेतु आपको अपना सर्वस्व न्यौछावर करने हेतु बाध्य कर दिया। आपने तदनुसार 20 दिसम्बर 1882 ई. को ब्रह्म मन्दिर, लाहौर में निम्नलिखित अद्वितीय पद

अगर किसी व्यक्ति का जीवन का उद्देश्य न हो,
तो उसके जीने का कोई अर्थ भी नहीं है।

गाकर निराला जीवनव्रत ग्रहण किया-

'सत्य शिव सुन्दर ही मेरा, परम लक्ष्य होवे;
जग के उपहार ही में, जीवन यह जावे।'

आत्माओं के जीवन में उच्च परिवर्तन आपके जीवनव्रत का प्रथम लक्ष्य था व इसी मुख्य लक्ष्य की पूर्ति के लिए आपने 18 फरवरी 1887 ई. को लाहौर में सत्यधर्म की घोषणा की। आपने वैज्ञानिक विधि को अपनाकर, मनुष्य के आत्मा के स्वभाव, उसके प्रारम्भ, मृत्यु व सत्य लक्ष्य के गूढ़ क्षेत्रों में अभूतपूर्व पहल की। धर्म की दुनिया में आप पहले वैज्ञानिक व दार्शनिक हैं, जिन्होंने धर्म व विज्ञान का हाथ मिलवाया। आपने फरमाया, "वैज्ञानिक विधि ही सत्यज्ञान की एकमात्र विधि है और जो विचार धाराएं तथा विश्वास इस पर पूरे नहीं उतरते, वह मानने योग्य नहीं हैं।"

आपके अथक प्रयासों, वाणी, लेखनी, शुभकामनाओं से शत-शत जनों की आत्मा में जो आश्चर्यजनक उच्च परिवर्तन आया उसका विश्व इतिहास में कोई सानी नहीं है। शराबी, नशेड़ी, शिकारी, भ्रष्ट, दरिन्दे, नकारात्मक सोच से भरे हृदय, स्वार्थी व घृणाकारी व्यक्ति बदल-बदल कर सात्त्विक जीवन की ओर एवं परोपकारी स्वभाव की ओर मुड़ते गए। माता-पिता व जीवनसाथी को सताने वालों को आपने इन उपकारियों के चरणों में झुका दिया।

आपने सत्यधर्म की खोज के दौरान प्राय: 300 पुस्तकों की रचना कर इन्हें संसार को दिया। आप स्थूल शरीर के साथ 3 अप्रैल 1929 ई. तक इस संसार में रहकर अपने जीवनव्रत के लिए पूर्णत: वफादार रहकर, रोम-रोम न्यौछावर होकर चारों जगतों के हित के लिए आहूति देते रहे। आपने अद्वितीय त्याग ग्रहण किए।

आज भी आप देवलोक से अपने मिशन के लिए व अधिकारी आत्माओं के आत्मिक भले के लिए किस प्रकार तड़पते हैं, मंगलकामनाएँ करते हैं व शुभ संग्राम करते हैं, वह अधिकारी हृदयों को उनके चरणों में झुकाने वाला दृश्य है।

इस लोक व परलोक में हमारे आत्मिक भले के ऐसे सच्चे आकांक्षी, पथ-प्रदर्शक रूहानी हमदर्द, ज्योतिदाता, बलदाता, सत्यधर्म शिक्षक गुरु देवात्मा का 169 वाँ शुभ जन्मदिन आप सभी को कोटि-कोटि मुबारक हो! शुभ हो!

- डॉ. नवनीत अरोड़ा

सच्चा कष्ट यदि सच्चाई के साथ सहन किया जाए,
तो वह पत्थर जैसे दिल को भी पानी-पानी कर डालता है।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव,
त्वमेव विद्या च द्रविणम त्वमेव,
त्वमेव सर्वम् मम देव देव.....

हे परम पूजनीय सत्य देव श्री देवगुरु भगवान्, एक मात्र आप ही मेरे सच्चे आध्यात्मिक माता एवं पिता हैं।

मेरे श्रद्धेय माता-पिता ने इस स्थूल जगत में मुझे शारीरिक रूप में जन्म दिया, वर्षों मेरी रक्षा तथा पालना की तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार उत्तम से उत्तम शिक्षा दिलाई। मुझ तुच्छ पर उन्होंने अनगिनत उपकार किए। अच्छा स्वस्थ शरीर, अच्छा मन तथा अच्छा मस्तिष्क दिया। आत्मिक-पूँजी के रूप में कितने ही मानसिक, कलात्मक तथा सात्त्विक गुण प्रदान किए। अच्छा तथा संस्कार संपन्न वातावरण दिया, जिससे पल बढ़कर मेरा बालपन बड़ा हुआ। वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान किया। सबसे बढ़कर सात्त्विक अर्थात् धार्मिक भाव प्रदान किये तथा पल्लवित किए।

मेरे श्रद्धेय माता-पिता ने मुझ तुच्छ पर अनगिनत उपकार किये हैं। लेकिन हे सतगुरु, 'आध्यात्मिक जगत्' में न तो उनका जन्म हुआ था, न वह मुझे ही इसमें जन्म दे सके। आपके बिना सारा मनुष्य जगत् आत्मिक अन्धकार में बुरी तरह ग्रस्त है। आपके अद्वितीय धर्मरूप में मेरे आत्मा की रोगों तथा विनाश से रक्षा, सत्य मोक्ष तथा विकास की पूर्ण सामग्री वर्तमान है। अतः हे भगवान्, एकमात्र आप ही मेरे सच्चे आध्यात्मिक माता एवं पिता हैं।

हे सद्गुरु, आप मुझे सब प्रकार की नीच गतियों, नीच चिन्ताओं, नीच घृणाओं तथा नीच जीवन के महा विनाशकारी पथ से मोड़कर क़दम-क़दम पर मेरी रक्षा करते हैं। आप ही मेरे आत्मा में उच्च भाव, उच्च राग एवं उच्चबोध जाग्रत एवं विकसित करते हैं। आप मुझे उच्च प्रेरणाओं से भरकर असीम उत्साह प्रदान करते हैं। हे दाता, जैसे सांसारिक माता-पिता बच्चे को शारीरिक रूप से जन्म देते हैं, उसकी रक्षा तथा पालना करते हैं तथा अच्छी शिक्षा दिलाते हैं - आप उन सांसारिक माता-पिता से लाखों गुणा अधिक बढ़कर धर्मजगत् में अधिकारी आत्माओं के जन्म देने वाले हैं, रक्षा, पालना तथा विकास करने वाले हैं। सत्य तथा विज्ञानमूलक धर्म की अद्वितीय शिक्षा देने वाले हैं। इसलिए हे भगवन, एकमात्र आप ही मेरे मुख्य तथा सार सम्बन्धी एवं आध्यात्मिक माता-पिता हैं। आपके ऐसे अद्वितीय धर्मरूप को सम्मुख लाकर मैं

महिलाओं की शिक्षा और उनका सशक्तिकरण सबके जीवन को
ज़्यादा सहिष्णु, धैर्यवान और शान्तिमय बनाने में मददगार होता है।

अति तुच्छ आपके श्रीचरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करता हूँ।

हे भगवन्, विश्व में मेरे भाई-बन्धु तथा मित्र बहुत हैं, जो मुझे अपने एक या दूसरे सुख में अपना सहायकारी पाकर मेरे प्रति बहुत सद्भाव, प्रेम तथा सम्मान रखते हैं। मुझे एक या दूसरी विधि से हर तरह प्रसन्न रखने का प्रयास भी करते हैं। इस विश्व में मेरे ऐसे भाई-बन्धु तथा मित्र भी बहुत हैं, जो मुझे अपने एक या दूसरे स्वार्थमूलक अभीष्ट में सहायकारी न पाकर व विघ्नकारी पाकर मेरे प्रति ईर्ष्या, द्वेष तथा घृणा अनुभव करते हैं तथा मुझे हर तरह से हानि पहुँचाने की आकाँक्षा रखते हैं। भगवन्, उनके प्रति कमोबेश मेरा अपना व्यवहार भी ऐसा ही है। सच्चा बन्धु तथा सच्चा मित्र तो वह होता है, जो प्रतिक्षण सब प्रकार से हमारी रक्षा, भलाई तथा विकास चाहता एवं करता हो। हे देव, एकमात्र आप ही मेरे सच्चे बन्धु तथा सच्चे मित्र हैं, क्योंकि मेरी रक्षा, विकास एवं हित की सच्ची चिन्ता केवल आपको ही रहती है, जबकि मुझे अपनी रक्षा, विकास तथा हित की लेशमात्र भी चिन्ता नहीं होती। आप धन्य हैं, आप धन्य हैं!

हे देव , इस विश्व में विद्याएं भी अनेक प्रकार की हैं, जो कितने ही प्रकार से बहुत हितकर भी हैं। लेकिन 'जीवन विद्या' अर्थात् आत्मा व धर्म का प्रकृतिप्रदत्त तथा विज्ञानसम्मत सत्यज्ञान तथा बोध सर्वश्रेष्ठ, अति हितकर तथा परमावश्यक है। अतः, हे सृष्टि के अद्वितीय आविर्भाव, आप विश्वव्यापी विकासकारी नियम के मूरत रूप हैं। आप सर्वश्रेष्ठ, परमावश्यक तथा अतुलनीय धर्मज्ञान के दाता हैं। आपके ऐसे अद्वितीय देवरूप को सम्मूख लाकर मैं अति तुच्छ आपके श्रीचरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूँ।

हे 'सच्चे धार्मिक जनों' के परम आदर्श, विश्व में धन भी अनेक प्रकार के हैं, यथा; रुपया-पैसा, ज़मीन-जायदाद, ऊँची पदवी, मान सम्मान, सौन्दर्य तथा विभिन्न कलाएं आदि। लेकिन, इन सब ऐश्वर्यों में 'धर्मधन' सर्वोच्च तथा सर्वश्रेष्ठ धन है। आप ही इस धर्मधन के एक मात्र स्रोत हैं। भगवन्, आपके ऐसे देवरूप को सम्मुख लाकर मैं अति तुच्छ आपके श्री चरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूँ तथा आपसे यही शुभाशीष दान माँगता हूँ कि हे भगवन्, मैं अति तुच्छ आपके सत्य, शुभ एवं आध्यात्मिक सौंन्दर्य के अनुरागी देवरूप के विराट दर्शन सदा-सदा के लिए लाभ करने का सच्चा आकाँक्षी एवं अधिकारी बन सकूँ तथा मन-वचन-कर्म से आपको जीने की योग्यता लाभ कर सकूँ! अन्त में मैं यही कहूँगा 'तुम आशा और विश्वास हमारे, तुम धरती और आकाश हमारे।'

आसपास की दुनिया में परिवर्तन से कहीं अधिक बदलाव की ज़रूरत
व्यक्ति के भीतर होती है।

अमृत रस

प्रकृति (Nature) के विकासक्रम में 'मनुष्य' वनस्पति-जगत् एवं पशु-जगत् के लाखों वर्षों के पश्चात इस धरा पर आया। उस काल का मनुष्य निपट पशुओं जैसा ही था, उन्हीं की तरह जीवन व्यतीत करता था, अपनी सारी ज़रूरतें पशुओं की न्याईं पूरी करता था। कच्चा माँस खाता था, पेड़ों पर या पहाड़ों की कंदराओं में छिपकर जीवन की रक्षा करता था। मनुष्य के पास जीवन की रक्षा के लिए कोई हथियार आदि नहीं थे। गर्मी, सर्दी, बरसात, सूखा व भूकम्प आदि प्राकृतिक आपदाओं से निपटने का कोई साधन उसके पास नहीं था। मनुष्य बातचीत करने में भी बहुत असहाय था।

हम अनुमान लगाने का प्रयास करें कि सबसे पहला मनुष्य, जो पशुओं की एक विशेष प्रजाति से विकसित हुआ, वह अपनी सारी आवश्यकताओं के लिए कितना असहाय रहा होगा। हिंसक पशुओं के मध्य, सब प्रकार की सहुलतों से वंचित तथा प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण रूप से असहाय अवस्था में मनुष्य की रक्षा कैसे हुई होगी। आज का सुसभ्य, पढ़ा-लिखा तथा प्राय सब सहुलतों से पूरी तरह सुसज्जित मनुष्य पुरातन युग के मनुष्य की दयनीय अवस्था का अनुमान ही नहीं लगा सकता। मनुष्य की ऐसी असहाय अवस्था कब तक रही होगी, इसका अनुमान लगाना भी अत्यन्त कठिन है।

लेकिन, क्योंकि मनुष्य उन्नतशील मानसिक शक्तियों को लेकर धरती पर प्रगट हुआ था, इसलिए धीरे-धीरे इसे अपने जीवन का तथा अपने चारों ओर के फैले हुए परिवेश वा वातावरण का ज्ञान होने लगा। कभी ऐसा समय भी था कि हमें यह तक नहीं मालूम था कि मनुष्य की मृत्यु भी हो जाती है तथा मरकर मनुष्य को क्या हो जाता है? ऐसी कौनसी वस्तु है कि जिसके पश्चात भी जब मृत-व्यक्ति जीवित नहीं होता था, तो उसके मृत शरीर को सम्भाल कर रखा जाता था कि शायद फिर कभी जाग जाए। यह सिलसिला एक लम्बे काल तक चलता रहा।

धीरे-धीरे समय के साथ-साथ उस काल के मनुष्य को थोड़ा सा समझ आने लगा, इस शरीर को कुछ हो गया है, शरीर नष्ट होने लगता है, दुर्गन्ध आने लगती है, देखने में भी कुरूप हो जाता है। कई बार परलोक से दिवंगत आत्मा डराने तथा अपनी अनुचित माँगे मनवाने के लिए दबाव भी डालती थीं। शायद ऐसे ही कुछ कारण रहे होंगे, जो मृत देह का किसी एक या दूसरी विधि से संस्कार किया जाने लगा तथा मृतक के इसी डर से लोग उससे दूर-दूर भागने लगे।

जब यह ज्ञान होने लगा कि मनुष्य मर जाता है तथा सभी को एक न एक दिन मरना पड़ेगा, शायद तभी से मनुष्य को यह चिन्ता सताने लगी, क्या कोई ऐसी विधि

आपका कोई भी काम महत्त्वहीन हो सकता है,
किन्तु महत्त्वपूर्ण यह है कि आप कुछ करें।

है, जो मुझे मरने से बचा सके और मैं अमर हो जाऊँ?

संसार के सभी धर्मों का जन्म मुख्यत: जिन दो बातों को लेकर हुआ, उनमें से एक बात तो यह कि मनुष्य सुख चाहता है, दु:ख नहीं चाहता तथा दूसरी बात यह कि मनुष्य को मृत्यु का डर सताता है। प्राय: प्रत्येक मत व धर्म ने मृत्यु से रक्षा पाने के लिए एक या दूसरी विधि बताई है, जिनकी प्रमाणिकता अभी शेष है। हमारे हिन्दू धर्म में भी एक पौराणिक कथा बहुत विख्यात है, जिसमें बताया जाता है कि एक बार देवताओं तथा राक्षसों ने मिलकर इस अभिप्राय के लिए समुद्र-मंथन किया, ताकि उसमें से अमृत (एक प्रकार का ऐसा रसायण) निकाला जा सके, जिसका सेवन करके सब अमर हो जाएँ। तथा कथा सुनने में बहुत आकर्षक है, लेकिन इसकी प्रमाणिकता कहाँ से लायें? और फिर अभी यह जानना भी बाकी है कि मनुष्य को अमर होकर करना क्या है, जीना कैसे है?

इस प्रश्न को अभी यहीं छोड़ते हैं कि अमर होकर मनुष्य को क्या करना चाहिए। अभी हम केवल इस बात पर विचार करेंगे कि अमृत किसे कहते हैं, क्या यह वास्तव में संसार में वर्तमान है? यदि हाँ, तो इस समय कहाँ है, यह कैसे प्राप्त हो सकता है? इस प्रश्न का उत्तर समझने के लिए हमें यह जानना अति आवश्यक है कि प्राणी मर क्यों जाता है? किसी साधारण जन से यह बात पूछें, तो वह शायद यही उत्तर देगा कि शरीर से उसकी जीवनी-शक्ति अर्थात् आत्मा निकल गई, इसलिए वह मर गया। यदि आगे फिर प्रश्न किए जाए कि आत्मा में ऐसा क्या था, जो वह शरीर से निकलने के लिए विवश हुई, तो उत्तर मिलना अत्यन्त कठिन हो जाएगा। आत्मा के बारे में भी अलग-अलग मतों की एक नहीं, अपितु भिन्न-भिन्न धारणाएं हैं। यदि कोई धर्म आत्मा को अजर-अमर मानता है, तो मनुष्य के मर जाने का कोई अर्थ नहीं रह जाता। इसलिए अमर होने हेतु अमृत प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं रह जाती। लेकिन, वास्तव में समस्या अति गम्भीर है और अटल सत्य यह है कि जीव मर जाता है । अत:, यह जानना ज़रूरी है कि मनुष्य मर क्यों जाता है?

हमारा अस्तित्व मुख्यत: दो वस्तुओं के प्राकृतिक योग से बना है, जिनमें से एक को शरीर (जोकि जड़-पदार्थों से बना है) तथा दूसरे को जीवनी-शक्ति अर्थात् आत्मा (जोकि विभिन्न शक्तियों का गठन-प्राप्त समूह है) कहते हैं। दोनों वस्तुओं में प्रतिपल अच्छिन्न परिवर्तन होते रहते हैं। हमारे शरीर में हर क्षण लाखों नई-नई कोशिकएं (Cells) बनती रहती हैं तथा पुरानी कोशिकाएं टूटती रहती हैं। यह प्रक्रिया आयु

सही समय पर सही काम करना या कहना ही कूटनीति नहीं है, बल्कि
यह ग़लत कामों का किसी भी वक्त विरोध करने की कला भी है।

पर्यन्त चलती रहती है। प्रायः ऐसा होता है कि बचपन से यौवनकाल तक की आयु की एक सीमा तक यह कोशिकाएं बनती अधिक हैं तथा टूटती कम हैं। हमारा शरीर भार, शक्ति तथा ओज आदि में विकास करता रहता है। आयु की एक सीमा पूरी हो चुकने पर शरीर की जितनी कोशिकाएं बनती हैं, लगभग उतनी ही टूटती रहती हैं। शरीर अपनी अवस्था को लेकर लगभग एक जैसी अवस्था में बना रहता है। एक समय ऐसा आता है, जबकि कोशिकाएं बनती कम हैं लेकिन टूटती अधिक हैं, जोकि जीवन की प्रौढ़ावस्था कहलाती है। जीवन में एक समय ऐसा भी आता है, जबकि शरीर किसी बाहरी भोजन, जल, वायु, उष्मा या जीवन-दायक अन्य सामग्री को स्वीकार करने की अवस्था में नहीं रहता। ऐसी अवस्था में जीवनी-शक्ति अर्थात् आत्मा के लिए भी कोई और विकल्प नहीं बचता कि वह उस निष्क्रिय से शरीर का परित्याग कर दे। अतः, उचित समय पर आत्मा उस शरीर का परित्याग कर देती है तथा शरीर की मृत्यु हो जाती है।

शरीर की इस मृत्यु के साथ सब कुछ समाप्त नहीं होता, क्योंकि मुनष्य के अस्तित्व में मुख्य भाग शरीर नहीं, अपितु 'आत्मा' है। अतः, जब तक आत्मा जीवित रहता है, मनुष्य का अस्तित्व भी बना रहता है। आत्मा को जीवित रहने के लिए स्थूल या सूक्ष्म शरीर की आवश्यकता होती है। स्थूल-शरीर की मृत्यु के उपरान्त आत्मा उसी शरीर से सूक्ष्म-सैल सिर की ओर एकत्रित करके सूक्ष्म-शरीर का निर्माण कर लेती है तथा फिर उसी में निवास करने तथा जीवित रहने के योग्य हो जाती है। अतः, जब तक आत्मा की मृत्यु नहीं हो जाती, तब तक मृत्यु हो जाने की बात निरर्थक है, अर्थात् आत्मा की मृत्यु हो जाना ही पूर्ण मृत्यु है। यहाँ एक और बात समझना अति आवश्यक है और वह यह कि प्रत्येक जीवित अस्तित्व का स्थूल शरीर एवं जीवनी शक्ति अर्थात् आत्मा इसी प्रकृति में बदली हुई परिस्थितियों की उपज है तथा शरीर की ही तरह आत्मा भी एक दिन अवश्य मर जाती है, यदि वह जीवन विषयक अटल नियमों का शतप्रतिशत सही रूप में पालन नहीं करती।

अब मूल प्रश्न यह है कि इस मृत्यु से मुक्ति कैसे पाई जाए तथा अमर जीवन कैसे लाभ किया जाए? प्रिय मित्रो, हम इसी प्रश्न के उत्तर को उलटे रूप में समझने का प्रयास करेंगे। स्थूल-शरीर की मृत्यु कब होती है? यह बात तो हमें समझ आ गई कि शरीर से आत्मा के निकल जाने से स्थूल-शरीर की मृत्यु हो जाती है। अब प्रश्न यह है, कि आत्मा की मृत्यु कब होती है? भगवान् देवात्मा की विज्ञानमूलक अद्वितीय शिक्षा

आज मौजूदा ज़िम्मेदारियों से बचकर निकलने के बावजूद आप भावी उत्तरदायित्वों से भाग नहीं सकते।

के अनुसार जब आत्मा की 'आत्मा' उससे बाहर निकल जाती है, तो 'आत्मा' की मृत्यु हो जाती है। अब यह 'आत्मा' की 'आत्मा' क्या है?

जिस तरह शरीर की रोग प्रतिरोध शक्ति के दुर्बल तथा अकुशल हो जाने से मनुष्य का शरीर रोगग्रस्त हो जाता है तथा यदि रोग का सही निदान न किया जाए या न हो सके, तो एक दिन जीवनीशक्ति मनुष्य के शरीर को त्याग देती है तथा इसकी मृत्यु हो जाती है। ठीक उसी तरह 'आत्मा' की भी 'आत्मा' होती है। बहुत सारी भावशक्तियों के गठन-प्राप्त समूह को 'आत्मा' कहते हैं। इस समूह की सारी भाव-शक्तियों की एक प्रधान शक्ति होती है, जिसको भगवान् देवात्मा ने 'निर्माणकारी शक्ति' के नाम से सम्बोधित किया है।

यदि यह प्रधान शक्ति दुर्बल तथा अकुशल हो जाए, तो मनुष्य का आत्मा भी दुर्बल तथा अकुशल होने लगता है तथा यदि यह दुर्बलता का क्रम निरन्तर चलता रहे तथा आत्मा भगवान् देवात्मा के देवज्योति एवं देवतेज सम्पन्न देवप्रभावों को पाने को ग्रहण करके आत्मसात् करने के योग्य नहीं रहती, तो उस आत्मा की शरीर की न्याईं मृत्यु हो जाती है।

जिस तरह शुद्ध वायु (आक्सीजन) शरीर के लिए जीवनदायक अमृत है, ठीक उसी तरह भगवान् देवात्मा के 'देवज्योति एवं देवतेज सम्पन्न देवप्रभाव' आत्मा के लिए अमृत हैं, जिनके निरन्तर रूप में ग्रहण करते रहने से किसी मनुष्य की आत्मा न केवल दुर्बल तथा अकुशल नहीं रहती, अपितु ऊर्जावान तथा कुशल होती जाती है। दिन-प्रतिदिन इसका बल बढ़ता जाता है तथा यह अमर जीवन लाभ करने की अधिकारी बनती जाती है।

यह देवप्रभाव किसी जन को भगवान् देवात्मा के देवरूप का अनुरागी बनने से ही प्राप्त हो सकते हैं, क्योंकि भौतिक सूर्य की न्याईं भगवान् देवात्मा भी धर्मजगत् में 'आध्यात्मिक सूर्य' आध्यात्मिक जीवनदाता हैं, जिनका हमारे आत्मिक जीवन के लिए वर्तमान होना परमावश्यक है। अतः, सब मनुष्यों का यह अति पवित्र कर्तव्य तथा अधिकार है कि वह भगवान् देवात्मा के देवरूप के अनुरागी बनने का अधिक से अधिक प्रयास करें तथा उनके देवप्रभावों को लाभ करके सच्चे देवअमृत को लाभ करने के भी अधिकारी बनकर इनका हित लाभ कर सकें! काश, हम सबके हित का मार्ग प्रशस्त हो!

आज के कष्टों का सामना करने वाले के पास आगामी कल के कष्ट
आते हुए झिझकते हैं।

देव स्तोत्र की भव्यता

हे धर्म के पूर्णांग अवतार, आपने सारी मानवता के सर्वोच्च हित के लिए, मंगल के लिए अपने अद्वितीय धर्मरूप के विराट दर्शन प्रदान करने हेतु जिस अद्वितीय देवस्तोत्र का महादान दिया है, उसके लिए हम सब आपको कोटि-कोटि नमन करते हैं।

हे भगवन्, आपने अपने महा आश्चर्यजनक देवरूप के प्रति फ़रमाया है कि आप सत्य तथा शुभ के प्रति पूर्णांग अनुराग एवं असत्य तथा अशुभ के प्रति पूर्णांग वैराग्य विषयक अद्वितीय देव-शक्तियाँ (अर्थात् धर्म-शक्तियाँ) लेकर विश्वपटल पर धर्म का पूर्णत: निराला धर्मरूप लेकर अवतरित हुए हैं। अर्थात् आप पूर्णत: निराली एवं अलौकिक देव शक्तियों से विभूषित देव जीवनधारी देवात्मा हैं। एकमात्र आप ही सत्यधर्म प्रवर्तक हैं, सर्व हित सम्पादक हैं। आप सब अधिकारी अर्थात् सुपात्र जनों का सर्वांग कल्याण करते हैं। भगवन्, आपके ऐसे देव शक्तियों से विभूषित, देव जीवनधारी, सत्यधर्म प्रवर्तक एवं सर्वहित सम्पादक महान् देवरूप को सम्मुख लाकर आपको कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं।

हे सत्यधर्म के मूर्त रूप, आपने देवस्तोत्र में यह भी फ़रमाया है कि आपके धर्मरूप में देवशक्तियों की मंगलकारी प्रतिक्रियाओं के फलस्वरूप देवज्योति (अर्थात अद्वितीय विवेक) का प्रकाश एवं विकास हुआ है। ऐसी देवज्योति, जो धर्मजगत् की जान और प्राण है। जब कभी सौभाग्यवश किसी सुपात्र जन को आपकी इस परम हितकर देवज्योति के उजाले में आने का सुअवसर प्राप्त होता है, तो वह तुरन्त अपने आत्म अन्धकार को खोने लगता है। ऐसे सौभाग्यवान् जन को आपकी देवज्योति के उजाले में अपनी आत्मा का गठनप्राप्त रूप अपनी असल अवस्था में दिखाई देने लगता है। आत्मा के रोग, उनसे होने वाला महाहानिकारक पतन एवं कुशल दिखाई देने लगता है। तात्पर्य यह कि ऐसा जन आत्मा एवं सत्यधर्म का जीवन्त ज्ञान एवं बोध लाभ करने का अधिकारी बनता है। हे परम पूजनीय भगवन्, आपके आत्मअंधकारहर्ता, आत्मज्योतिप्रदाता, आत्मरूप, आत्मरोग, आत्मपतन एवं कुशल दर्शाता; आत्मा एवं सत्यधर्म के विज्ञानमूलक शाब्दिक परन्तु जीवन्त ज्ञान एवं बोधप्रदाता महान् देवरूप को सम्मुख लाकर हम सब आपको बारम्बार प्रणाम करते हैं।

हे देव, आपने अपने अलौकिक देवस्तोत्र में यह भी स्पष्ट किया है कि आपके देवरूप में देवज्योति के दूसरे पक्ष अर्थात् देवतेज (अर्थात् अद्वितीय आध्यात्मिक बल) का भी प्रकाश एवं विकास हुआ है। आप अपने इस धर्मबल को सुपात्र जनों में

दु:ख को दूर करने की एक ही औषधि है - मन से दु:खों की चिन्ता न करना।

संचार करके उनकी आत्मिक दुर्बलता को नष्ट करते हैं तथा ऐसे दुर्बल किन्तु अधिकारी जनों की आत्माओं को अपने धर्मबल के द्वारा बलशाली बनाते हैं। ऐसे जनों के आत्मिक विकारों को नष्ट करते हैं, उनके आत्मिक रोगों तथा पतन को नष्ट करते हैं। उनकी आत्मिक मैल को नष्ट करके उन्हें सच्ची आत्म-शुद्धि अर्थात् सत्यमोक्ष प्रदान करते हैं। हे सच्ची आत्म शुद्धि प्रदाता भगवन्, हम अति तुच्छ आपके श्रीचरणों में दीनता एवं श्रद्धापूर्वक आपको हृदयगत भावों से बार बार नमस्कार करते हैं।

हे विकासक्रम के उच्चतम आविर्भाव, आप अधिकारी जनों को सच्ची आत्मिक शुद्धि प्रदान करने के अतिरिक्त उनमें नाना प्रकार के उच्चभाव, उच्चराग एवं उच्चबोध जागृत तथा विकसित करके उन्हें उच्च जीवन व धर्मजीवन की सच्ची बरक़तों से मालामाल करते हैं। अतः हे उच्च जीवन व धर्मजीवन के दाता, आपके आत्मिक दौर्बल्यहर्ता, आत्मिक विकारहर्ता, आत्मिक रोग एवं पतनहर्ता, सच्ची आत्मिक शुद्धि प्रदाता; तथा इसके विपरीत उच्चभावों, उच्चरागों एवं उच्चजीवन के विकासकर्ता अद्वितीय देवरूप को सम्मुख लाकर हम अति तुच्छ आपके श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम करते हैं।

भगवन् आप धन्य हैं, दाता आप धन्य हैं! आपका हर प्रकार से शुभ हो! मंगल हो! कल्याण हो!

जीवन में क्या करें?

इस जगत् में कभी भी किसी का किसी से कोई सम्बन्ध स्थायी नहीं होता। हर सम्बन्ध से एक न एक दिन अलग होना प्रकृति की एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, जिसमें अपना स्वयं का शरीर भी है। इसका नष्ट होना भी शाश्वत सत्य है, अन्य सम्बन्धों, जैसे माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, रिश्ते-नातों की बात तो बहुत दूर की बात है। अतः, जो जीवन हमें एक बुद्धिमान प्राणी के रूप में मिला है, इसकी सार्थकता भी हमें ही निश्चित करनी है। हर रोज़ नई सुबह का स्वागत करते हुए यह प्रण लें - आज के दिन पूरे मनोयोग से वही कार्य करना है, जो मेरे लिए भी शुभ हो व सच्ची शान्ति प्रदान करें तथा दूसरों का भी शुभ करें।

दुनिया ऐसे लोगों से भरी पड़ी है, जो असाधारण सुख की
उम्मीद में सन्तोष को ताक पर रख देते हैं।

कृतज्ञता सुमन

नाम - सतीश कुमार मेहता
पिता का नाम - स्व. श्री मदन लाल मेहता
माता का नाम - श्रीमती कैलाशवती
जन्म स्थान - खन्ना (पंजाब)
जन्म तिथि - 31.12.1949
पता - 76/2 पुरवावली, रुड़की-247667
मो. - 9837448465, 7906799036

मैं विगत 35 वर्षों से रुड़की में रह रहा हूँ। वर्ष 2013 से मैं सत्यधर्म बोध मिशन की सभाओं में आ रहा हूँ। राधास्वामी मत के साथ जुड़े होने के कारण, यद्यपि मैं मिशन की लगभग सभी प्रतिज्ञाओं का पहले से ही पालन कर रहा था फिर भी डॉ. नवनीत अरोड़ा जी के द्वारा की गई सभाओं ने मेरे जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। मुझे अपने अन्दर छुपी हुई कमियाँ नज़र आयीं, जिनको मैंने काफ़ी हद तक सुधारने का प्रयास किया तथा सफलता भी मिली।

मिशन में आने के बाद से मेरे आत्मविश्वास व आत्मनियन्त्रण में बढ़ोतरी काफ़ी हुई है तथा पत्नी परिवार व अन्य व्यक्तियों के साथ सम्बन्ध पहले से अधिक मजबूत व विश्वसनीय हुए हैं। दूसरों के अवगुणों को नज़र अन्दाज करने व उनके गुणों की सरहाना करने व अपनाने की प्रकृति बढ़ी है, जिसके कारण आपसी सम्बन्धों में और मधुरता व मजबूती आ गई है। कृतज्ञता के भाव में अत्याधिक वृद्धि हुई है। ऐसा महसूस होता है कि मिशन में आने के बाद से मेरे अन्दर सकारात्मक विचारों का तेजी से संचार हुआ, क्योंकि अब अन्य लोग मेरी बातों व सुझावों को पहले से अधिक गंभीरता से लेन लगे हैं। विषम परिस्थितियों में हमारी समस्याओं का समाधान करने में डॉ. अरोड़ा साहब की प्रेरक बातें बहुत सहायक सिद्ध होती हैं तथा इसमें सहायकारी शक्तियों का हाथ स्पष्ट महसूस होता है। 'शुभ हो!' का सम्बोधन अच्छा लगता है तथा सकारात्मक उर्जा प्रदान करता है।

मिशन के द्वारा समाज हित में चलाए जा रहे कार्य उच्च कोटि के हैं। यहाँ दिये जाने वाले प्रेरक सम्बोधन आत्मा पर सीधे सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। मैं मिशन के उज्जवल भविष्य की हृदय से मंगलकामना करता हूँ। सबका शुभ हो!

- सतीश कुमार मेहता (रुड़की)

चाहे सबसे अच्छा हो, अथवा सबसे ख़राब, सिर्फ़ और सिर्फ़ समय ही है,
जो हमारे पास होता है।

मुंहासों से निजात पाने के लिए अपनाएं ये डाइट

मुंहासों और डाइट में बहुत ही तालमेल पाया जाता है और इसलिए मुंहासों की समस्या से बचने के लिए आपको अपने डाइट में बदलाव करना होगा। पहली चीज़ जो आपको अपनी डाइट में शामिल करनी चाहिए, वह ज़्यादा पानी का सेवन। कुछ लोगों का यह भी कहना है कि ज़्यादा दूध पीने से त्वचा पर पिपंल्स आते हैं, लेकिन कई शोधों से यह बात सामने आई है कि फुल मिल्क की तुलना में टोण्ड मिल्क से ज़्यादा पिंपल्स आते हैं। यह भी माना जाता है कि चॉकलेट खाने से चेहरे पर पिंपल्स होते हैं। जिन फूड्स में मीठा ज़्यादा हो, ऐसे फूड्स को खाने से बचें। ताकि वह आपके पिंपल्स को ज़्यादा बढ़ने न दें। जिन लोगों को पिंपल्स की समस्या होती है, उन लोगों को अपनी डाइट में जिंक को शामिल करना चाहिए। केले और किशमिश आदि में जिंक बहुत अधिक मात्रा में पाया जाता है। आम और पपीते में विटामिन-ए अहुत अधिक मात्रा में होता है, इसलिए इसे अपनी डाइट में शामिल करें। ओमेगा-3 फैटी एसिड को भी अपने डाइट में शामिल करें। इनसे पिपंल्स कम निकलते हैं। आयोडिन से भरपूर आहार जैसे नमक, दूध और आलू आदि को थोड़ा कम लें।

शरीर को स्वस्थ रखने के कुछ आसान उपाय

- चेहरा मनुष्य का आईना होता है, चेहरे को देखकर ही हम बता सकते हैं कि कौन सा व्यक्ति दु:खी है, सुखी है, परेशान है, उदास है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चेहरा ही हमारी और आपकी उम्र की पोल खोल देता है, चाहे हम कितने ही बाल क्यों न काले करें।
- हमारी हर शारीरिक, मानसिक परेशानी या तकलीफ़ का सीधा असर चेहरे पर पड़ता है।
- शरीर में कहीं भी दर्द हो, तो उसका प्रभाव चेहरे पर तुरन्त पड़ता है। मानसिक परेशानी में चेहरा कुम्हला जाता है और चेहरे की कान्ति खो सी जाती है।
- खून की कमी के कारण भी चेहरा मुरझाया लगता है।
- सात्त्विक भोजन न करने से भी चेहरे पर काफ़ी असर पड़ता है। मानसिक परेशानी के कारण चेहरे पर फोड़े-फुंसियाँ भी निकल आती हैं।
- अक्सर पानी कम पीने के कारण भी चेहरे की चमक चली जाती है।
- तेज धूप में बाहर निकलने से चेहरा रूखा और बेजान सा हो जाता है।

हिंसा के ज़रिये शान्ति हासिल नहीं की जा सकती,
यह केवल समझदारी से ही हासिल हो सकती है।

आपने कहा था

..... गतांक से आगे

(भगवान देवात्मा की वाणी के अंश)

दिनांक: 21.04.1920 **प्रचारक एक जगह जमकर काम करें**

गुजरांवाला और वज़ीराबाद के प्रचारक का हाल सुनकर भगवान् ने फ़रमाया- अब तो तुम्हारा डर उतर गया होगा। वहाँ तो तुमको एक परिचित जन भी मिल गया, जिसने तुम्हारी बहुत बड़ी मदद कर दी और अगर कोई मदद करने वाला न भी होता, तो भी लाज़मी और ज़रूरी था कि काम होता और लोगों पर अच्छे असर पड़ते। हम चाहते हैं कि एक प्रचार पार्टी लाहौर से लेकर पेशावर तक और इधर सक्खर कोयटे तक जो बड़े-बड़े शहर खाली पड़े हैं, वहाँ पर काम करें। एक पार्टी बनाई जावे और इन जगहों पर प्रचार हो और फिर एक-एक जगह जमकर काम किया जाये। हरेक जगह काम हो सकता है। अगर तुम लगातार एक-एक उपयोगी जगह देखकर काम कर सको तो बहुत कामयाबी हो सकती है।

साधन के लिए चार बजे उठो

आज पूजनीय भगवान् के साथ इस प्रकार की बातचीत हुई-

भगवान् - अपना हाल सुनाओ।

मैं - साधारणगत: अच्छा है। मगर यह दिक्कत है कि एक-एक समय जो विशेष धक्का लगता है, वह थोड़े दिनों के बाद ढीला पड़ जाता है और वैसी बेक़रारी नहीं रहती।

भगवान् - क्या कारण है?

मैं - आलस्य अनुराग के कारण रोज़ाना सुबह उठने का अभ्यास नहीं करता।

भगवान् - क्या तुम ठीक दस बजे सो जाते हो?

मैं - जी नहीं! बहुत बार ग्यारह बजे सोता हूँ।

भगवान् - क्यों?

मैं - एक या दूसरे काम में लगा रहता हूँ।

भगवान् - सिवाए किसी ख़ास ज़रूरत के ऐसा नहीं करना चाहिए। कई बार खास ज़रूरत पर यह हो सकता है कि दिन को सोकर थकान दूर कर ली जाए। मगर ज़्यादा अच्छा यही है कि समय पर सोकर सुबह चार बजे उठो। क्या घर वगैरह कुछ खींचता है?

अन्नदान महादान है। विद्यादान और भी बड़ा दान है। अन्न से क्षणिक पर विद्या से जीवनपर्यन्त तृप्ति होती है।

मैं – जी नहीं। सिरफ़ यह ज़रूरत मालूम होती है कि दो तीन महीने में एक दो बार घर जाने का मौका मिल जाये।

भगवान् – क्या बच्चे खींचते हैं?

मैं – जी नहीं।

भगवान् – और कोई बात?

मैं – जब कभी बाहर काम करना होता है तो फिर एक या दूसरा काम आ पड़ने की वजह से उसमें लग जाता हूँ और फिर चाहकर भी साधन नहीं हो सकता।

भगवान्– अगर चार बजे उठने का अभ्यास हो जाए, तो फिर इतना साधन ज़रूर हो सकता है कि जो काम करने के लिए बल पैदा कर दे। काम करते हुए यह बात सामने रहनी चाहिए कि काम करने का सबसे बड़ा फल यह है कि मेरी निर्माणकारी शक्ति बढ़ती है। मनुष्य बहुत सी बातों के लिए काम करता है। मसलन पैसे के लिए। एक मरहटे ने राजा का ख़िताब लेने के लिए डिप्टी कमिश्नर के इशारे से अपनी जायदाद गिरवी रख दी, कैसा गज़ब का नशा। तुम उच्च कार्य की ख़ातिर त्याग करो।

.....क्रमशः

जैसी संगत वैसी रंगत

एक स्थान पर एक जन दो तोते बेच रहा था। एक की क़ीमत वह पाँच रुपये बताता था, दूसरे की पचास रुपये। उसके पास एक ग्राहक आया और पूछा कि तोते तो दोनों एक समान नज़र आते हैं, परन्तु उनकी क़ीमतों में इतना फरक क्यों? तोते बेचने वाले ने कहा, 'आप इन दोनों को ले जाएँ और फिर इन दोनों का अन्तर देख लें।' वह ग्राहक उन दोनों तोतों को खरीद कर ले गया। घर जाकर उसने देखा कि पाँच रुपये वाला तोता गालियाँ दे रहा है और पचास रुपये वाला तोता कुछ हितकर वाक्य बोल रहा है। बात यह थी कि पाँच रुपये वाला तोता किसी चोर के घर रहा था और पचास रुपये वाला तोता किसी साधु सन्त के आश्रम में। उन्हें जैसी संगत मिली, उन्होंने वैसी ही रंगत पकड़ ली।

बोलना अगर चाँदी है तो मौन रहना सोना है। बोलने से रिश्ते बनते या बिगड़ते हैं, पर शान्ति के फल तो मौन के वृक्ष पर ही लगते हैं।

देव जीवन की झलक

फरवरी सन् 1900 ई. में देवसमाज के तेरहवें वार्षिक देवोत्सव के शुभ अवसर पर श्री देवगुरु भगवान् अत्यन्त बीमार हो गए। अतिरिक्त मानसिक परिश्रम के कारण वह उत्सव के कुछ दिल पहले ही स्वास्थ्य के विचार से बहुत नाज़ुक हालत में पहुँचे हुए थे। उस पर एक दो दिन पहले कुछ सेवकों की अवज्ञाओं से उनके हृदय को बहुत आघात् और क्लेश पहुँचा, जिसका फल यह हुआ कि उन पर एक सांघातिक स्नायु रोग का आक्रमण हुआ। सिर में निहायत भयानक चक्कर शुरू हुए। ऐसा मालूम होता था कि कोई उन्हें उठा-उठाकर और ऊपर आसमान में ले जाकर नीचे फेंकता है। पलंग पर लेटे हुए भी उन्हें आराम न था। करवट लेना तक बहुत मुश्किल था; उसके लिए कोशिश करते ही उन्हें इस प्रकाश प्रतीत होता था। ऐसी दशा में एक मेहरबान डॉक्टर को बुलाया गया। उन्होंने ग्यारह बजे आने का वादा किया। एक सेवक ग्यारह बजे से बहुत पहले उनको साथ लाने के लिए उनके पास गए। वह हमारे और हज़ारों देशवासियों की तरह दायित्व और अंगीकार पालन का भाव बहुत कम रखते थे; इसलिए रोगी की परवाह न करके रास्ते में अपने एक मित्र के मकान पर काफ़ी देर तक गप्पें मारते रहे और बारह बजे के करीब श्री देवगुरु भगवान् के घर पर पहुँचे। श्री देवगुरु भगवान् ने उनकी अनुचित प्रतीक्षा और उनके अंगीकार भंग करने से लगातार एक घंटे तक बहुत क्लेश पाया था। उनके आने की खबर पाते ही उन्होंने यह कहकर कि - मेरी ज़िन्दगी किसी ख़ास मनुष्य के हाथ में नहीं है, जिसका कोई घमण्ड करें, मैं अपनी इस नाज़ुक हालत में भी किसी जन की अनुचित अधीनता स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं। यदि विश्व के प्रबन्ध में मेरा रहना ज़रूरी होगा, तो मैं अवश्य रहूँगा। मैं ऐसे अंगीकार भंगकर्ता और कठोर मनुष्य का मुँह देखना नहीं चाहता- डॉक्टर को नीचे की मंज़िल से ही वापस कर दिया गया और इस महा कठिन रोग के होने पर भी उनसे इलाज न करवाया।

यह भयानक पीड़ा कितने काल तक जारी रही। इसी पीड़ा के समय देवसमाज के जन्मदिन पर (जो उत्सव का विशेष दिन था और जिस दिन श्री देवगुरु भगवान् उत्सव की सभा में आप विराजमान होकर उपदेश आदि दिया करते थे) उनके भीतर यह प्रबल आकांक्षा उत्पन्न हुई कि वह उस हालत में भी किसी तरह कुछ देर के लिए सभा में उपस्थित हों और अपनी पूर्ण अनुपस्थिति से सामाजिक जनों को निराश होने का मौक़ा न दें। आख़िर वह अपनी इच्छा शक्ति के बल से उठ बैठे। निहायत दिक्कत

इस बात का कोई महत्त्व नहीं है कि मनुष्य मरता कैसे है?
बल्कि इसका कि वह जीवित कैसे रहता है!

से स्नान करके और कपड़े बदलकर वह सभा स्थान में पहुँचे। कुछ देर वेदी पर बैठकर थोड़े से शब्दों में अपना कुछ भाव प्रकाश करके उठ आए। इस परिश्रम से जैसी आशा की जा सकती थी, उनकी पीड़ा कुछ और बढ़ गई। परन्तु, फिर अपनी प्रबल इच्छा और बहुत सी मंगलकामनाओं के बल से उन्होंने धीरे-धीरे बहुत दिनों में इस रोग से निवृत्ति लाभ की।

.....क्रमशः

मेरे देवगुरु करतार

सच्चे गुरु है देवगुरु और न दूजा कोय,
देव प्रभाव और दान की ज्योति से जन-जन मंगल होय,
आ...या, आ....या, आ...या, आया मैं अब तेरे द्वार,
भटक रहा मैं माया जाल में, मेरा भी करो उद्धार,
मुझको है तेरी दरकार, ओ मेरे देवगुरु करतार,
आया, आया मैं अब तेरे द्वार,

पल-पल मिल रहे, नीच दुःखों को मैं सह न सकूँगा,
अष्ट कर्मो की दल-दल में, मैं अब रह न सकूँगा,
मुझे अब जीना हुआ दुश्वार, ओ मेरे देवगुरु करतार,
आया, आया मैं अब तेरे द्वार,

क्षणभगुँर है यह मेरी काया, मतलब के है रिश्ते नाते,
कोई किसी का नहीं जहाँ में, झूठी है ये सारी बातें,
कमल सच्चा है तेरा दरबार, ओ मेरे देवगुरु करतार,
आया, आया मैं अब तेरे द्वार,

दे दो देवज्योति मुझे दाता, खुले चक्षु मेरे मन के,
दे दो देवबल मुझे दाता, छट जायें बादल पाप कर्म के,
तू नीच जीवन से तारणहार, ओ मेरे देवगुरु करतार
आया, आया मैं अब तेरे द्वार,

- कमल जैन (रुड़की)

जीवन एक बाज़ी के समान है। हार जीत तो हमारे हाथ में नहीं है,
पर बाज़ी को खेलना हमारे हाथ में है।

अपनी ज़िम्मेदारियों से बचना

चलो, आज देखते हैं कि इन्सान कैसे अपने आपसे चालाकी कर अपनी ज़िम्मेदारियों से हट जाता है। यह सब उसके दिमाग़ का खेल है। इन्सानी दिमाग़ बहुत जटिल है, जटिल भावनाओं और विश्वासों से भरा हुआ। जब किसी मुसीबत का सामना करना पड़ता है, तो कुछ इन्सान तो हिम्मत से, बिना किसी डर या उलझन के, आगे बढ़कर मुसीबत का सामना करते हैं। परन्तु, ऐसे लोग बहुत कम होते हैं। कुछ लोग रोते रहते हैं, खुद को इतना बेचारा समझने लग जाते हैं कि मुश्किल को हल करने की जगह उसे और बढ़ा देते हैं।

कुछ लोग इतना डर जाते हैं कि वे अपने आपको विश्वास दिलाने की कोशिश करते हैं कि कोई मुश्किल है ही नहीं। वे उसकी पूरी तरह से उपेक्षा करते हैं और उस मुश्किल का हल खोजने की बजाए, उसका सामना करने की बजाए, वे उसे तब तक अपने अन्दर बढ़ने देते हैं, जब तक कि वह उनके लिए मुसीबत नहीं बन जाती।

यह तो इन्सानों के बचाव के तरीक़ों (**defence mechanism**) पर निर्भर कुछ प्रतिक्रियाएँ हुई। वर्ल्ड ट्रेड सेण्टर से जाकर हवाई जहाज टकराने का ही उदाहरण लो। कितने लोग हैं, इस देश (अमेरिका) में, हर किसी की अलग प्रतिक्रिया है। कुछ लोगों पर तो जैसे बिल्कुल भी असर नहीं है, तो कुछ को इतना गुस्सा आता है कि बेक़सूर लोगों पर हमला कर आते हैं और उसकी सफ़ाई देने की कोशिश करते हैं, यह कहकर कि ये लोग आतंकवादियों की तरह दिखते हैं, इन्हें यहाँ रहने का कोई हक़ नहीं हैं। ऐसे लोग क़ानून अपने हाथ में लेने लगते हैं। यह एक बिलकुल ही ग़लत तरीका है। उन्हें अपने गुस्से की वजह से किए गए ग़लत कामों को सही साबित करने की बजाए, उस गुस्से को किसी सही और अच्छी दिशा में लगाने का प्रयत्न करना चाहिए।

कुछ लोगों ने ऐसी ही सही दिशा में अपनी ज़िन्दगी को मोड़ा है, इस त्रासदी के बाद। वे अपने परिवार और दोस्तों के और पास आ गए हैं। उन्होंने पहले से ज़्यादा दान-पुण्य का कार्य करना शुरू कर दिया है। कुछ ने अपने परिवार, दोस्तों और साथियों से छोटी-छोटी बातों पर बहस करना और झगड़ना बन्द कर दिया है। वे ज़िन्दगी में अधिक धैर्यवान हो गए हैं।

तो किसी भी स्थिति से निपटने के कई तरीक़े हैं। पर, अगर तुम मुश्किलों को छुपाने की राह चुनते हो, ऐसा दिखावा करते हो कि कोई मुश्किल है ही नहीं या फिर वह कोई बहुत बड़ी बात नहीं है और खुद ही गायब हो जाएगी, तो तुम अपने कल के लिए ज़्यादा मुश्किल पैदा कर रहे हो।

जब हम कोई काम करने का संकल्प करते हैं,
तो शक्ति अपने आप ही आ जाती है।

किसी भी मुसीबत को हल करने का सही तरीक़ा होता है कि पहले उसका गहराई से विश्लेषण करो। यह पता करो कि वह मुसीबत पैदा क्यों हुई, ताकि तुम उसे फिर से होने से रोक सको। उसके बाद उस मुश्किल को हल करने का सबसे आसान और सबसे शीघ्र तरीक़ा ढूँढने की कोशिश करो। हमेशा ऐसा सकारात्मक रवैया रखो कि कोई भी मुसीबत ऐसी नहीं है, जिसका तुम हल न निकाल पाओ।

और, सारी दुनिया को अपनी छोटी सी मुसीबत के बारे में बताते रहने की बजाए या फिर खुद पर तरस खाने की बजाए, सिर्फ़ जागो और अपनी ज़िन्दगी और अपनी मुश्किलों को अपने हाथों में लो और आगे बढ़ते चलो।

– परलोक संदेश

सिकंदर, फूलदान और खुशी

सिकंदर के घर पर पार्टी चल रही थी। उसने एक नया मोटर गैराज खोला था। उसके सारे रिश्तेदार, दोस्त और मोहल्ले वाले बधाई देने के लिए आए। उसके चचेरे भाई ने उससे कहा, क्या क़िस्मत पाई है आपने। आज से लगभग एक साल पहले किसी ने सोचा भी नहीं होगा कि आप एक दिन इतने बड़े गैराज के मालिक बन जाएँगे। काश, ऐसी किस्मत मेरी भी होती! सिकंदर हंसते हुए बोला, एक साल पहले तक मैं भी तुम्हारी तरह सोचता था। फिर एक चमत्कार ने मेरी ज़िंदगी बदल दी। चचेरे भाई ने पूछा, कैसा चमत्कार? सिकन्दर बोला, एक साल पहले तक मैं भी अपनी क़िस्मत को रोता था। एक दिन चाय की दुकान के पास मुझे एक सुन्दर फूलदान मिला। मैं उसे घर ले आया। दिन-रात मैं उसे निहारता रहता था। उसे रखने के लिए मैंने घर का सारा कचरा बाहर कर दिया। अगले ही दिन मैंने देखा, फूलदान के पास एक मकड़ी जाला बुन रही थी। मैंने अपने घर के सारे जाले साफ़ कर दिए। फूलदान बिना फूल के सूना लग रहा था, तो मैं फूल लेने गया, लेकिन पैसे न होने के कारण फूल नहीं ले पाया। उस दिन मैंने उसमें कुछ जंगली फूल डाल दिए। मुझे बहुत बुरा लगा। मैंने छोटे-छोटे काम करने शुरू कर दिए। नए फूल आए, घर साफ़-सुथरा हो गया, थोड़े बहुत पैसे भी आने लगे। मैं उस फूलदान का इतना दिवाना हो गया कि लोगों को किसी न किसी बहाने से फूलदान दिखाने के लिए घर लाने लगा। धीरे-धीरे लोग मुझ पर विश्वास करने लगे। मुझे काम में मज़ा आने लगा। उस फूलदान ने दुनिया को देखने का मेरा नज़रिया ही बदल दिया। पहले मैं सिर्फ़ शिकायत करता रहता था। पर अब फूलदान ने मुझे अपने ऊपर विश्वास करना सिखा दिया।

धैर्य और पुरषार्थ जीवन नौका की पतवार है, जो उसे मंज़िल तक पहुँचाते हैं।

नारी सम्मान, एक महान् भाव

भगवान् देवात्मा के अनन्य दार्शनिक-भक्त श्रद्धेय श्रीमान पी.वी. कनल जी एक स्थान पर फरमाते हैं कि नारी जाति के प्रति मेरे हृदय में सच्चा एवं बहुत गहरा सम्मान भाव है; यह कोई दिखावा या औपचारिक मात्र नहीं। किसी जन के हृदय में दूसरों के प्रति सम्मान-भाव, विशेषत: विपरीत-लिंगी जनों के प्रति 'सम्मान भाव' बहुत उच्च मूल्य रखता है। महिलायें 'मातृत्व' की भव्यता का प्रतिनिधित्व करती है। 'मातृत्व' पवित्रता एवं महानता का प्रतीक है। वह जन जो महिलाओं का यथार्थ में सम्मान नहीं करता, वह मातृत्व का भी सम्मान नहीं करता; (अर्थात् अपने माता का भी सम्मान नहीं करता)। जिस जन के हृदय में नारीत्व के सम्मान की पवित्र-ज्योति नहीं जलती, उसका जीवन अपने स्वयं के लिए तथा अन्य जनों के लिए कितना विनाशकारी है तथा वह जन कितना कृपापात्र है, इस बात का अनुमान भी नहीं हो सकता।

मेरे श्रद्धेय पिता जी के हृदय में महिलावर्ग के लिए गहरा सम्मानभाव था। जब कभी वह किसी कार्य के लिए घर से बाहर जाने लगते, तब अपनी जाई हुई पुत्रियों के भी चरण छूकर तथा आशीर्वाद लेकर जाया करते थे। उन्होंने अपने सभी पुत्रों को भी यही संस्कार प्रदान किये। मैं स्वयं भी अपनी छोटी बहन के चरण छुआ करता था। मेरे बहुत सम्माननीय तथा स्नेही पिता जी के देहावसान के पश्चात मेरा पालन-पोषण मेरी श्रद्धेय दादीजी तथा माताजी के द्वारा हुआ। दोनों महिलायें थीं। रिश्ते में मेरे सम्बन्धी पुरुष-वर्ग की ओर से मुझे कोई प्रेम तथा स्नेह प्राप्त नहीं हुआ; जबकि उपरोक्त दोनों महिलाओं के अपार प्रेम तथा स्नेह से मेरा जीवन भर गया।

मैंने जब भी धनवान व्यक्तियों को लोभ के ग़ार में गिरे पड़े पाया, उनकी तुलना में अपनी माता जी तथा बहनों को बलिदान की पवित्र मूर्ति के रूप में उपलब्ध किया है। जब भी मैंने ऐसे जनों को ललकारा तथा उनका प्रतिरोध किया, तभी नारीत्व के गहरे सम्मान के प्रति अपने आपको उनके सम्मुख झुके पाया। मेरा सारा शैशव-काल अपनी श्रद्धेय दादीजी तथा माताजी के अपार स्नेह तथा प्रेम के कारण सम्भव हो पाया। अत: मैं ऐसी महान सेवाकारी नारियों को कैसे भुला सकता हूँ? उनके उपकारी रूप के प्रति जितना ऋणी हूँ, उसे कैसे भूल सकता हूँ? मेरे नन्हे-आत्मा (**Child-Soul**) को जिस प्रेम तथा स्नेह की भूख थी, उसे मेरी उपरोक्त उपकारी महिलाओं ने भरपूर मात्रा में प्रदान किया। उनके इस महान् उपकार को मैं किस तरह भुला सकता हूँ।

जिसकी पत्नी नहीं, वह मनुष्य अक्षरश: गरीब है भले ही
वह कितना ही धनवान क्यों न हो

प्रिय मित्रो। श्रद्धेय श्रीमान् कनल जी के उपर्युक्त अमूल्य भावों के प्रकाश का अध्ययन करके मुझे भी अपने बाल्यकाल की एक स्वर्णिम घटना स्मरण हो रही है। जब कभी मेरे श्रद्धेय माता जी मेरे लिए कोई नई कमीज़ (Shirt) या कोई और नया कपड़ा सीकर देते, तो मुझे कहा करते थे कि अपनी बहनों के चरणों में इस कपड़े को रखकर तथा उनका आशीर्वाद लेने के पश्चात इसको पहनना। मैंने ऐसा कई बार किया है। श्रद्धेय माता-पिता जी के द्वारा बचपन में दिए गए ऐसे संस्कारों को स्मरण करके मैं आज भी आत्म-विभोर हो जाता हूँ एवं श्रद्धेय श्रीमान कनल जी को भी हृदय के गहरे भावों से धन्यवाद देता हूँ।

काश हम सबमें ऐसे उच्च-भाव प्रस्फुटित एवं विकसित हो सकें तथा हम आत्महित के आकांक्षी बन सकें।

- चन्द्रगुप्त (अम्बाला शहर)

उच्च जन सारे राज्य से भी क़ीमती

बहुत दिनों की बात है कि ईरान और टरकी में युद्ध चल रहा था। टरकी वाले हार रहे थे। परन्तु ईरान का संत फरीहुदीन अता उनके हाथ आ गया। ईरान वालों ने कहा "हम तुम्हारे जीते हुए प्रदेश को वापस कर देते हैं। तुम हमारे सन्त को छोड़ दो।" मगर टरकी वाले नहीं माने। फिर ईरान वालों ने कहा, "हम तुम्हें सारा ख़ज़ान दे देते हैं।" टरकी वाले फिर भी नहीं माने। आखिर ईरान के बादशाह ने टरकी वालों को कहा, "मैं अपना सारा राज्य तुम्हें समर्पण करने के लिए तैयार हूँ क्योंकि यदि हमारा सन्त हमारे साथ रहेगा तो हमारी संस्कृति, हमारी इन्सानियत और हमारी अध्यात्मिकता हमारे देश में रहेगी और हम जित्रन्दा और बलवान रहेंगे। हमारा सन्त ही हमारे पास न रहा तो हम अपने पतन की राह पर पड़ जाएंगे और हमारा नाश हो जाएगा।" ईरान के राजा की यह बात सुनकर टरकी वालों का भी दिल पिघल गया। उन्होंने ईरान के सन्त को छोड़ दिया और दोनों देशों में सन्धि हो गई।

स्त्री पुरुष की गुलाम नहीं - सहधर्मिणी, अर्द्धांगिनी और मित्र है।

भाव प्रकाश

(आत्मबल विकास शिविर, सितम्बर, 2019)

मैं देवाश्रम में पहली बार आने का सौभाग्य मिला, जोकि दिमाग़ को झिंझोड़ने वाला अनुभव रहा। वैज्ञानिक विधि से प्रकृति, आत्मा, धर्म का मर्म, परलोक आदि को समझाने हेतु यह अद्वितीय स्थान है। अध्यात्म के नए तथ्यों को समझने का अनूठा अवसर मिला। सारी व्यवस्थाएं ठहरने का प्रबन्ध, भोजन, परस्पर प्यार व सत्कार, साफ़ सफाई सभी कुछ तारीफ़ के काबिल हैं। जो इन चार दिनों में शान्ति व आंनन्द का अनुभव किया, वे शब्दों में व्यक्त नहीं हो सकती।

– प्रो. हरबंस सागर (पंचकूला)

[*नोट– आप मेजर सन्दीप सागर (जो 1999 में कारगिल में शहीद हो गए थे) के माननीय पिता जी हैं। दो माह पूर्व पंचकूला के एक स्कूल में डॉ नवनीत द्वारा दिए गए एक प्रेरणास्पद उद्‌बोधन से प्रभावित होकर रुड़की शिविर में तशरीफ लाए।*]

26 से 29 सितम्बर तक जो सभाएं हुई, उनसे नया जोश और उत्साह मिला। भगवान् देवात्मा के प्रति श्रद्धा का भाव गहरा हुआ है। बहुत ही प्रभावशाली सभाएं सुनने को मिली। भगवान् के चरणों में प्रार्थना और कामना है कि ये प्रभाव स्थाई रूप से मेरे भाव बन सकें। श्रीमानजी का विशेष रूप से धन्यवाद कि वह भगवान् की शिक्षाओं का निचोड़ हम तक पहुँचा रहे हैं। शुभ हो!

– अशोक खुराना (लुधियाना)

मुझे हर बार के शिविर से विशेष लाभ मिलता है। मेरी एक बुराई हर बार छूट जाती है। अब तक के शिविरों के प्रभाव से मेरी झूठ बोलना, चोरी करना, चुगली करना, देर से उठना, अधिक खाना, बड़प्पन दिखाना, आलस्य करना आदि बुराइयाँ छूट गई हैं। परोपकार, दान देना, चारों जगतों की सेवा में कुछ न कुछ करने के उच्च भाव बढ़े हैं। 'जीवन की नींव' जैसे विषयों को बार-बार सुनता हूँ और दूसरों को भी सुनाता हूँ। दूसरों को शिविरों में लाने के लिए प्रेरित करता हूँ परन्तु कोई आता ही नहीं। प्रयास जारी हैं, कभी न कभी तो सफलता ज़रूर मिलेगी। सबका शुभ हो!

– डॉ. काशीराम शर्मा, पन्हैड़ा खुर्द (हरियाणा)

विजय के क्षणों में हमें सैकड़ों मित्र मिल जाते हैं, लेकिन
पराजय अनाथ कर जाती है।

इस शिविर से प्रेरणा मिली कि हमें अपनी चिन्ताओं और गतियों से दूसरों का अच्छा सोचना चाहिए व हमेशा ही शुभ और सत्य का साथ देना चाहिए। मुझे यह भी प्रेरणा हुई कि अपने बच्चों को मिशन से जोड़कर ही हम अपने घर में स्वर्ग ला सकते हैं। सभी सेवाकारियों का शुभ हो!

- सरोज गुप्ता, पंचकूला

इस मिशन की मानवीय मूल्यों व प्रकृति प्रेम की शिक्षा ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैं हृदय की गहराइयों से इस मिशन का शुभ चाहता हूँ और आगे भी आने की पूरी कोशिश करता रहूँगा। सबका हार्दिक धन्यवाद!

- प्रवीण राठी, मानवतावादी विश्व संस्थान (कुरुक्षेत्र)

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि सत्यधर्म बोध मिशन, रुड़की के लोगों को अपने मूल अस्तित्व "प्रकृति" के प्रति कृतज्ञ, संवेदनशील व करूणामय बनाने का कार्य कर रहा है। सबका शुभ हो! सबका भला हो! भी इस मिशन का आदर्श वाक्य है। मैं मानवतावादी मिशन, कुरूक्षेत्र को धन्यवाद देता हूँ जिसकी प्रेरणा से मैं यहाँ आ पाया। सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद! शुभ हो!

- संघर्ष, मानवतावादी विश्व संस्थान(कुरुक्षेत्र)

पिछले कई महीनों से मैं न तो किसी शिविर में ही आया और न ही किसी साप्ताहिक साधन में, इसलिए मेरी अच्छे-बुरे की समझ बिलकुल ही समाप्त हो गई थी। परन्तु इस सितम्बर के शिविर में आने से मेरा बहुत भला हुआ है। भगवान् से प्रार्थना है कि वे मुझ पर अपनी कृपा दृष्टि बनाए रखें, जिससे फिर न भटक पाऊँ। सबका शुभ हो!

- रविन्द्र कुमार, डंढ़ेरा (रुड़की)

शिविर में बह रही ज्ञान गंगा की लहरों में डुबकी लगाकर अपनी आत्मिक झोली भरकर जा रहा हूँ। अपने विश्वासों, कर्तव्यों व व्यवहारों की परख करते हुए, अपने उपकारियों के उपकार स्मरण करते हुए व अपनी मानसिक शक्तियों को बढ़ाते हुए बलहारी मन से सबका धन्यवाद करता हूँ।

- ओम प्रकाश आदर्श (अम्बाला शहर)

दोस्ती का दुश्मन दगा है, जो कभी दग़ा न दे वही सगा है।

चार दिन आत्मबल विकास शिविर में आत्मा की खुराक मिलती रही; सच्चाई, भलाई व सफाई की प्रेरणा मिलती रही और नि:स्वार्थ सेवा का भाव विकसित होता रहा। शिविर की प्रत्येक प्रकार की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। शुभ हो! शुभ हो! सबका शुभ हो!

– राम किशन धमीजा, पदमपुर (राजस्थान)

मैं प्रतिदिन अपने सभी उपकारियों के लिए शुभकामना करती हूँ। श्रीमान जवाहरलाल जी को व अपने परलोकवासी धर्मसम्बन्धी भाई अरूण कुमार जैन को हृदय के गहरे भावों से धन्यवाद देती हूँ। इन दोनों के हमारे ऊपर बहुत उपकार हैं। मेरी ऐसी कामना है कि मेरा पूरा जीवन गुरु महाराज के चरणों में ही बीत जावे, इस दर से मैं कभी भी दूर न जाऊँ। सभी सेवाकारियों का शुभ हो!

– शिमलावती, भायला (सहारनपुर, उ0प्र0)

मुझे हर शिविर से कुछ न कुछ लाभ अवश्य होता है। शिविरों में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शिक्षाओं को सुनकर, मैं उन्हें अपने जीवन में उतार कर टेंशन फ्री रहता हूँ और हर समय अन्दर से खुश रहता हूँ। सबका बहुत-बहुत धन्यवाद!

– सुशील कुमार त्यागी, सहारनपुर

शिविर की सभाएं सुनकर अपने सभी उपकारियों के उपकार नज़र आए। सबसे पहले श्रद्धेय बाबा जी के उपकार नज़र आए। यदि वे गुरु महाराज के दर से न जुड़ते, तो पता नहीं हमारा परिवार कहाँ भटकता फिरता। उसके बाद श्रद्धेय पिताजी के प्रति सिर श्रद्धा से झुकता चला गया। उन्होंने हमें नेक रास्ते पर चलाया, अच्छे-बुरे की समझ पैदा की और हर प्रकार से समर्थ बनाया। श्रद्धेया माता जी के उपकारों को जब याद करता हूँ तो अपने को बहुत बड़ा अपराधी महसूस करता हूँ। गुरु महाराज तो उस बकरी को भी अपनी शुभकामनाओं में याद करते थे, जिस बकरी का उन्होंने बचपन में दूध पिया था, और एक मैं कृतघ्न अपनी जन्मदात्री माता जी की उतनी सेवा नहीं कर पाता, जितनी की वे हकदार हैं। अब से उनके प्रति और अधिक जागरूक रहूँगा और उनकी इतनी अधिक सेवा करूँगा कि उनको मेरे से कोई शिकायत न रहे। भगवान् के चरणों में यही प्रार्थना है कि मैं और मेरा परिवार हमेशा उनके दर से जुड़ा रहे। सबका शुभ हो!

– जंग बहादुर दहिया, शादीपुर (हरियाणा)

कभी-कभी उन लोगों से भी शिक्षा मिलती है, जिन्हें हम
अपने अभिमानवश अज्ञानी समझते हैं।

सभी साधन बहुत ही सुन्दर, अवर्णनीय। कुछ भी बोलूँ; कम ही होगा। इसलिए यही कहना चाहती हूँ कि जब तक जीवित रहूँ, बार-बार यहाँ आती रहूँ और परलोक जाकर भी इस प्यारे मिशन से जुड़ी रहूँ। आश्रम में पाई सभी सेवाओं के लिए सभी सेवाकारियों का धन्यवाद, उनका शुभ हो!

- ममता सक्सेना, चण्डीगढ़

यह शिविर बहुत ही सफल रहा। सूक्ष्म शक्तियों की कृपा बरसती रही। प्रत्येक सभा अपने आप में नायाब थी। जिन-जिन सेवाकारियों ने अपनी सेवाएं प्रदान कीं उन सबका धन्यवाद। मेरी ऐसी कामना है कि गुरु महाराज की कृपा हम सब पर सदा बनी रहे, जिससे हम अपनी आत्मा का ज़्यादा से ज़्यादा भला कर सकें। सबका शुभ हो!

- अनिल कुमार अग्रवाल, अम्बाला शहर

भगवान की असीम कृपा है। शिविर में उनकी सूक्ष्म उपस्थिति व प्रभाव साक्षात् महसूस होते रहे। जो भला उनकी रोशनी व प्रभावों से हुआ है तथा हो रहा है, हम उस उपकार का क्या कर्ज़ उतार सकते हैं। अपने हर श्वास से धन्यवाद दें, तो भी कम है। धर्म सम्बन्धी भी बहुत प्यारे अनुभव होते हैं, जो नि:स्वार्थ भाव से यहाँ धर्म पाने व आत्महित की आकांक्षा को लेकर आते हैं, जिससे वातावरण और भी पॉजिटिव हो जाता है। भगवान् का आभार कैसे करूँ, उनकी कृपा से जीवन जीने लायक बना है, दूसरे भी अनुप्राणित होते हैं, दिल धन्य-धन्य रहता है। इस जीवन से जितना निकल पाये, वो कम है। सबका शुभ हो!

- डॉ. नवनीत अरोड़ा (रुड़की)

ग़लती बतने वाला

यदि कोई हमारी ग़लती बताता है, तो हमें ख़ुश होना चाहिए कि कोई तो है, जो हमारे जीवन में पूर्णता व सुधार का आकांक्षी है।

शिक्षा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों को निभाने की योग्यता है।

शुभ संग्राम

18 से 26 अक्तूबर 2019 तक श्रीमान जवाहर लाल जी के साथ धर्म प्रचार में श्री सुशील कुमार पुंडीर मायला 18 से 22 तक रहे फिर श्री जंग बहादुर सिंह जी शादी पुर 22 से 26 तक रहे। तथा आपके निम्न प्रकार से सेवाकारी बने-

दिनांक	स्थान	विज़िट	सभा/साधन
18.10.19	कुरुक्षेत्र	-	श्रीमती सुरजीत कौर
	"	डॉ. अश्विनी मेहता	प्रो. राजेश कुमार अग्रवाल
	थानेसर	मानवतावादी	श्री प्रीतम सिंह तोमर परिवार
19.10.19	थानेसर	श्री जसवीर सिंह मास्टर	श्री सतपाल सिंह तोमर
	कुरुक्षेत्र	श्री राजेन्द्र सिंह तोमर	-
	पेहोवा	श्री चरणजीव सुनन्दा	-
	चीका	-	डॉ. रमेश गर्ग
	गूना	श्री परवीन कुमार	-
	कैथल	श्री एस.एल.गुलाटी	-
	कैथल	-	श्री कर्मचन्द अग्रवाल परिवार
20.10.19	पुँडरी	-	श्री जय प्रकाश मनचन्दा
	फतेहपुर	-	श्री संजय कुमार गुप्ता
	निसंग	-	श्रीमती मन्जू (श्री प्रदीप कुमार)
	हिसार	प्रो. एस.के. अरोड़ा	श्री बलदेव कुमार गर्ग
	"	प्रो. डी.सी. निझावन	-
21.10.19	हिसार	-	श्री बलदेव कुमार गर्ग
21.11.19	फतेहाबाद	-	श्रीमती पार्वती जी &
	सिरसा	-	श्रीमती कंचन
	"	-	श्री सुमेर चन्द गर्ग परिवार
22.11.19	सिरसा	-	श्री पवन कुमार गुप्ता
	"	-	श्री राजीव गुप्ता परिवार
	"	-	श्री पुरुषोत्तम दास कंसल
	"	-	श्री पवन तायल
	"	-	श्री धर्मपाल मेहता

स्कूल तो ज्ञान के झरने हैं, जहाँ कुछ छात्र अपनी प्यास बुझाते हैं, तो कुछ एक दो घूँट पीते है और कुछ तो सिर्फ़ कुल्ला ही करते हैं।

दिनांक	स्थान	विज़िट	सभा/साधन
23.11.19	मलेंका	श्री मेहर सिंह संधू	–
		–	श्री जसमिन्द्र सिंह
	तलवाड़ा खुर्द	–	श्री तारा चन्द तनेजा
	सिरसा	श्री सेठी जी	–
24.11.19	"	श्री पुरुषोत्तम दास	–
	मानसा	–	डॉ. सबोध कुमार गुप्ता
	"	–	श्रीमती सरला गुप्ता
	संगरुर	श्री हरीश चन्द्र अरोड़ा	श्री प्रदीप कुमार गुप्ता
	"	श्री विनोद कु. अरोड़ा	–
25.11.19	"	श्री कन्हैया लाल	–
	राजपुरा टाऊन	–	श्री बृजमोहन पुत्र श्याम लाल
	बुढलाडा	श्रीमति रितू सिंगला	–
		–	श्री दर्शन कुमार सिंगला

हिसार में श्री राधे श्याम शर्मा हर रोज़ सेक्टर-15 के पार्क में सुबह 5 बजे योग व्यायाम कराते हैं। 21 अक्तूबर को प्रातः 28 जनों को योग श्रीमान जी ने कराया तथा आधा घण्टा कुछ हितकर संदेश भी पहुँचाया, उसमें से कुछ जन श्री बलदेव कुमार के घर सुबह 8 बजे सभा में भी शामिल हुए।

18 स्थानों में जाने, 28 सभाएं कराने और 16 जनों को विज़िट और हर रोज़ निज का धर्म साधन कराने तथा इस प्रकार सुबह 5 बजे से रात 10 बजे तक हितकर संग्राम करने का धर्मसाथियों को अवसर मिला।

इस दौरान तीन नई पत्रिकाएं जारी हुई। 30,000 दान, 4,000 की पुस्तकें, 2 हज़ार रुपए पत्रिका का चन्दा प्राप्त हुए। सहायकारी शक्तियों की सहायता का धन्यवाद! सभी मिलने वालों को रुड़की में आयोजित होने वाले आगामी महाशिविर में आने की प्रेरणा की गई। कई जनों ने आने का वायदा भी किया। सभी स्थानों पर सभाओं में शामिल होकर लोगों ने उत्साह लाभ किया। सबका शुभ हो!

पुस्तकों का मूल्य रत्नों से भी अधिक है, क्योंकि रत्न बाहरी चमक-दमक दिखाते हैं , जबकि पुस्तकें अन्तःकरण को उज्जवल करती हैं।

प्रेरणास्पद उद्‌बोधन सेवा एवं सम्पर्क

पिछले दिनों डॉ. नवनीत अरोड़ा जी निम्न प्रकार से विभिन्न उद्‌बोधनों द्वारा सेवाकारी बने-

देहरादून - 22 सितम्बर को स्थानीय ग्राफ़िक एरा हिल यूनिवर्सिटी के इंजीनियरिंग के विद्यार्थियों को आपने 'जीवन का लक्ष्य व सफलता' विषय पर प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया। प्राय: 400 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। यह सत्र यहाँ के डायरेक्टर डॉ अजय कुमार ने रखवाया, जोकि **IIT Roorkee** में डॉ. नवनीत जी के विद्यार्थी भी रहे हैं।

रुड़की- 1 अक्तूबर को स्थानीय लालकुर्त्ती में स्थित केण्टोनमेन्ट बोर्ड स्कूल में आपने 'महात्मा गाँधी जी के जीवन में मानवीय मूल्यों की घटनाओं व स्वच्छता' पर हृदयस्पर्शी उद्‌बोधन दिया। प्राय: 100 से ऊपर विद्यार्थी व शिक्षक लाभान्वित हुए।

चण्डीगढ़ - 10 अक्तूबर को स्थानीय केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर 29 में आपने प्रिंसीपल महोदया श्रीमती मीनाक्षी गुप्ता जी व उनके पति श्री मोहन गुप्ता जी से भेंट की। श्री गुप्ता जी शहजादपुर से पूजनीय भगवान् के समय के सेवक रहे श्री रूलिया राम जी के पौत्र हैं। हितकर बातचीत से प्राय: एक घण्टे तक दोनों ने बेहद लाभ उठाया।

पंचकूला - 10 अक्तूबर को 12 से 1 बजे तक स्थानीय सेक्टर-11 में स्थित चमन लाल डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल में 11वीं व 12 वीं के विद्यार्थियों को 'जीवन में सन्तुलन व सफलता के सूत्र' विषय पर आपने उद्‌बोधन दिया। बड़ा भावुक माहौल बना। बच्चों के दिल भर आए तथा प्रिंसीपल महोदया श्रीमती अंजलि ने उद्‌बोधन से प्राप्त लाभ का अश्रुपूरित आँखों से वर्णन किया। इस अवसर पर उनके पिता प्रो. हरबन्स लाल जी व श्री यशपाल सिंघल जी भी उपस्थित रहे। प्राय: 100 बच्चे लाभान्वित हुए।

जीरकपुर - 10 अक्तूबर को श्री यशपाल सिंघल जी के सेक्टर-20, पंचकूला में नए खरीद किए निवास पर भोजन व आराम करके जीरकपुर के पास सिंहपुरा गाँव में एक सरकारी स्कूल में दोपहर बाद चलाए जा रहे 'अशियाना' के नाम से सेवा प्रकल्प में जाकर आपने बच्चों को 'जीवन के बनने व बिगड़ने के नियम' सिखाए। प्राय: 100 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। **IIT Roorkee** के भूतपूर्व विद्यार्थी चन्द्रमोहन (1979 बैच) व श्रीमती विभा जी आपको यहाँ पर ले गए।

चौंदा (संगरुर) - उसी दिन सायं अपने पुश्तैनी गाँव में पहुँचकर आप अपने चचेरे

देने वाले का हृदय उपहार की वस्तु को प्रिय व बहुमूल्य बना देता है।

भाइयों के पास ठहरे। हितकर बातचीत से सभी ने लाभ उठाया।

राजपुरा – 11 अक्तूबर को सनातन धर्म सीनियर सैकण्डरी स्कूल में कक्षा 11वीं व 12वीं के बच्चों को 'व्यक्तित्व विकास के सूत्र' विषय पर आपने उद्‌बोधन दिया। श्री मदल लाल जी घई ने यह सत्र रखवाया व साथ में रहे। प्राय: 100 विद्यार्थी लाभान्वित हुए।

अम्बाला शहर – 11 अक्तूबर की सायं आप श्रीमती बृज जी के निवास पर मिले, जो 5 से 8वीं कक्षा के दौरान आपकी शिक्षिका रहीं हैं। आपने व आपके धर्म पति ने इस भेंट से काफ़ी लाभ उठाया। तदुपरान्त आप अपने सहपाठी सरदार गुरविन्द्र सिंह जी से सोनिया कॉलोनी स्थित उनके निवास पर मिले। उनकी धर्म पत्नी व माता-पिता को लेकर एक घण्टा साधन करवाया। अन्त में श्री अनिल अग्रवाल जी के परिवार से भेंट की व विश्राम किया।

अधोई (बराड़ा, जि. अम्बाला) – 12 अक्तूबर को आपको जय पब्लिक स्कूल में मुख्य अतिथि के रूप में बुलाया गया। प्राय: एक घण्टा आपने अध्यापकों को प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया, जिससे सभी धन्य-धन्य बोध करने लगे। तत्पश्चात छोटे बच्चों के माता-पिता का सत्र आरम्भ हुआ, जिससे आपने उन्हें 'अच्छे माता-पिता बनने के सूत्र' बताए। सारा वातावरण एक विशेष प्रकार की सकारात्मकता से भर गया। यह सत्र स्कूल के चेयरमैन प्रो. के. एल. जौहर जी ने (Farmer VC, Kurukshetra University)रखवाया तदुपरान्त नन्हे मुन्ने बच्चों के द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक प्रोग्राम का लुत्फ़ उठाया व इस माहौल में प्राय: 5 घण्टे व्यतीत किए।

पंचकूला– 30 अक्तूबर को प्रात: 9:30 बजे स्थानीय Govt. Senior Secondary School, Sector 7 में 11वीं व 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों को 'प्रेम का जीवन में महत्त्व' विषय पर प्रेरणास्पद उद्‌बोधन दिया। आपने बताया कि स्वयं से प्रेम करना, माता-पिता, संस्था व अध्यापकों, अपने देश व मानवता तथा अन्तत: प्रकृति के चारों जगतों से प्रेम करना क्यों ज़रूरी है। श्री यशपाल जी सिंघल, उनके सुपुत्र तथा पुणे से उनकी सुपुत्री सपरिवार इस सत्र से लाभान्वित हुई।

चण्डीगढ़– 30 अक्तूबर को ही प्रात: 11:30 बजे UIET, Punjab University में पहले इंजीनियरिंग के छात्रों तथा तत्पश्चात शिक्षकों को प्राय: दो घण्टे से अधिक क्रमश: 'जीवन का अर्थ' तथा 'सकारात्मकता का महत्त्व' विषयों पर उद्‌बोधन दिया।

फूल और फल सदैव उपयुक्त उपहार हैं।

आत्मबल विकास महाशिविर

(18-21 दिसम्बर, 2019)

शिविर स्थल : हरमिलाप धर्मशाला, साकेत, रुड़की

भावपूर्ण निमन्त्रण

18-12-2019, बुधवार

वर्कशाप - उच्च जीवन की ओर

प्रात: 09:30 बजे पहला सत्र	:	उच्च जीवन मेरा लक्ष्य
से दूसरा सत्र	:	उच्च जीवन की राह
दोपहर 1:30 बजे तीसरा सत्र	:	उच्च जीवनधारी
सायं 4:00 बजे	:	भजन वेला
सायं 5:30 (साधना सत्र)	:	जहर, अमृत व चुनौतियाँ
रात्रि 8.30 बजे	:	भक्ति संगीत

19-12-2019, वीरवार

प्रात: 9:00 बजे (साधना सत्र)	:	धर्म की सही समझ व प्राप्ति
प्रात: 11:30 बजे	:	विश्वास चिकित्सा/विशुद्ध सेवा सत्र
सायं 4:00 बजे	:	भजन वेला
सायं 5:30 (व्याख्यान सत्र)	:	नई आशाओं के स्रोत हैं-देवात्मा
रात्रि 8:30	:	मिशन व शिविरार्थियों का परिचय

20-12-2019, शुक्रवार

(परम् पूजनीय भगवान् देवात्मा का शुभ जन्म दिवस)

प्रात: 6.00 बजे	:	भजन, जन्म वेला की महिमा
प्रात: 9.00 बजे (साधना सत्र)	:	देवात्मा का महाव्रत व हमारी जिम्मेवारी
प्रात: 11:30	:	विश्वास चिकित्सा/विशुद्ध सेवा सत्र
सायं 4:00 बजे	:	बाल सभा
सायं 5.30 बजे (व्याख्यान सत्र)	:	सर्वहित सम्पादक हैं देवात्मा

21-12-2019, शनिवार

प्रात: 9.00 बजे (साधना सत्र)	:	आगे भी बढ़ो!
प्रात: 10.30 बजे (समापन सत्र)	:	आपके विचार व आरती

नोट: कृपया अभी से उपर्युक्त देव प्रभावदायक मण्डल से अपनी आत्मिक बैटरी को चार्ज करवाने का संकल्प लें। रेल रिजर्वेशन आदि करवा लें। हालात अनुकूल होते जायेंगे, विश्वास रखें। अपने आने की सूचना अवश्य दें। जो जन तैयारियों में भागीदारी निभाना चाहें वो 15 या 16 दिसम्बर तक अवश्य देवाश्रम रुड़की में पहुँच जावें। नए जन 17 दिसम्बर सायं तक या 18 दिसम्बर प्रात: 9 बजे तक अवश्य पहुँच जावें। इन दिनों में महाशिविर की सफलता हेतु मंगल कामनाएं अवश्य करें।

स्वामी डॉ. नवनीत अरोड़ा के लिए प्रकाशक व मुद्रक श्री ब्रिजेश गुप्ता ने कुश ऑफसैट प्रैस, ग्रेटर कैलाश कॉलोनी, जनता रोड, सहारनपुर में मुद्रित करवा कर 711/40, मथुरा विहार, मकतूलपुरी, रुड़की से प्रकाशित किया
सम्पादक - डॉ0 नवनीत अरोड़ा, D-05, हिल व्यू अपार्टमेण्ट्स, आई.आई.टी. परिसर, रुड़की
ज़िला हरिद्वार - 247667 (उत्तराखण्ड) 01332-285667, 94123-07242